बनाम जन

हिन्दी कोश परम्परा और रामचन्द्र वर्मा

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

हिन्दी कोश परम्परा और रामचन्द्र वर्मा

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. के. सी. शर्मा, चित्तौड़गढ़
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 40 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–65 रुपये
80 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–105 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात	4
कोश और उसकी जरूरत	5
हिन्दी के आधुनिक कोशकार और रामचन्द्र वर्मा	9
रामचन्द्र वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	24
हिन्दी कोश-रचना की परम्परा में रामचन्द्र वर्मा का योगदान	48
संदर्भ-ग्रन्थ सूची	66

अपनी बात

साहित्य लेखन की बुनियाद भाषा है। भाषा मनुष्य की केवल एक सार्वजनिक सम्पत्ति ही नहीं जो उसे विरासत में मिलती है बल्कि भाषा का बर्ताव मनुष्य को संवेदनशील बनाता है या कहें कि उसे सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाता है। नयी शताब्दी का चौथाई हिस्सा बीतने को है और हमारे देखते देखते अच्छी हिन्दी बोलने वाले सार्वजनिक वक्ता दुर्लभ होते जा रहे हैं। राजनेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों का हवाला खोजने के बजाय साहित्य के संसार में ही यह गुण अब विरल श्रेणी में है। कवि और लेखकों से अपेक्षा की जाती है कि वे भाषा को भी नया संस्कार देंगे और हमारी भाषा में हजारीप्रसाद द्विवेदी से हरिशंकर परसाई तथा मुक्तिबोध से रघुवीर सहाय तक अनेक रचनाकारों ने यह संभव भी किया है।

भाषा के प्रति लापरवाह बर्ताव का सबसे बड़ा नुकसान वैचारिकता को होता है। समर्थ विचारों के लिए समर्थ भाषिक क्षमता होनी चाहिए। जैसे-जैसे लिखने की आदत में कमी आ रही है वैसे-वैसे हम कमजोर नागरिक होते जा रहे हैं। राजनेताओं की घटिया उक्तियों पर रस लेना अब किसी को परेशान नहीं करता। टीवी बहसों में गालियों-फूहड़ भाषा का प्रयोग अब सामान्य बात होती जा रही है।

साहित्य की दुनिया में देखें तो नयी शताब्दी की नयी रचनाकार पीढ़ी आ गई है। इस नयी पीढ़ी में भी ऐसे समर्थ रचनाकारों की कमी नहीं जो भाषा के अधिकारी प्रयोक्ता हैं तब भी भाषा का सार्वजनिक रूप विकृति की तरफ है। हमारे अखबार अशुद्धियों को लगातार छापते हैं, अनेक रचनाकार शब्दों का लापरवाह प्रयोग करते हैं और टोके जाने पर अपने को कबीर या मनोहर श्याम जोशी सरीखा बताने में भी संकोच नहीं करते। ऐसे में पूछने का मन होता है कि क्या आप शब्दकोश का नियमित उपयोग करते हैं? बहुभाषी कोश तो आप रखते ही होंगे। हिन्दी का थिजारस समान्तर कोश आपके पास है? क्या आपने मुहावरा, कहावत और पर्याय कोश देखा है? आप व्यंग और व्यंग्य का अंतर तो जानते ही होंगे? बहरहाल।

हमारी भाषा को समर्थ और बेहतर बनाने में पिछली पीढ़ी के लोगों ने अनेक काम किये हैं। आचार्य रामचन्द्र वर्मा (1889-1969) उनमें से एक थे। स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानी रहे आचार्य वर्मा ने हिन्दी को अनेक कोश दिए। उनके निधन की आधी शताब्दी के बाद भी उनके द्वारा सृजित कोश हमारी जरूरत बने हुए हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के युवा शोधार्थी राजकुमार ने उनके अवदान को इस विनिबंध में गंभीरता से समझने की कोशिश की है। इस अंक को पिछली पीढ़ी के एक मनीषी आचार्य के प्रति यह कृतज्ञता ज्ञापन नयी पीढ़ी को 'सही हिन्दी' के लिए किंचित जागरूक कर सकेगा ऐसी कामना है।

आशा है सभी पाठकों को भी यह अंक उपयोगी लगेगा।

पल्लव

राजकुमार

कोश और उसकी जरूरत

मनुष्य की तरह संभव है कि भाषा और शब्द के भी परिवार हों। अब यह अलग बात है कि शब्दों की सांसारिकता को मनुष्य अपने भाषा संसार में आजीवन एक संसाधन की तरह उपयोग करता है। तो क्या स्वयं मनुष्य भी इस भौतिक संसार में मात्र एक संसाधन भर नहीं है? यह प्रश्न कृत्रिम-बौद्धिकता वाले इस युग में हमें ठहर कर सोचने-विचारने का अवसर देता है। यही नहीं वस्तुतः शब्दों का तानाबाना भी ठहर कर उपयुक्त होने के जिन सामूहिक प्रयासों से जुड़ा हुआ है, उसको ही व्यावहारिक बनाने के लिए मनुष्यों ने 'भाषा' की संज्ञा गढ़ी है, जिसमें शब्दों के पारस्परिक संबंधों को अभिव्यक्त करने के कई प्रयोगगत सोपान होते हैं। और संसार की किसी भी भाषा के कोश में शब्दों के इन्हीं प्रयोगगत सोपानों से परिचय बनाने का अनुशासन निबद्ध होता है, जिसका व्यावहारिक आधार कोश-रचना एवं सैद्धान्तिक आधार कोश-विज्ञान कहलाता है। बहरहाल, संसार भर की भाषाओं में शामिल शब्दों का संसार मनुष्यों के इतिहास जितना ही प्राचीन और गतिशील है, जिसका लेखाजोखा अब तक के कई कोशकारों ने अपने कोशों में सुरक्षित रखने का पूरा-पूरा प्रयास किया है। यह सहज जिज्ञासा हो सकती है कि शब्दों के इस लेखेजोखे वाले कोशों के अध्ययन की क्या आवश्यकता है? मेरी उक्त जिज्ञासा साठ वर्षों तक कोश-रचना कार्यक्षेत्र में सक्रिय रहे रामचन्द्र वर्मा जैसे कोशकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन द्वारा उससे जुड़ी इन्हीं आवश्यकताओं और संभावनाओं का विश्लेषण तथा विवेचन प्रस्तुत करने की दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। अब मैं यह कार्य कहाँ तक कर पाया हूँ, यह बतलापाना मेरे लिए संभव नहीं है; इसलिए इसकी थोड़ी-बहुत सुध यदि कोई ले पाएँगे तो वे इस अध्ययन के प्रबुद्ध जिज्ञासु पाठक लोग ही होंगे।

2.

शब्द-संग्रह कार्यों की परम्परा आदिमयुग के मनुष्यों की स्मरण शक्ति का विस्तार करने से जुड़ी प्रक्रिया है। कोशों के रूप में उसकी परिणति संसार भर में बहुत प्राचीन मालूम होती है, जिसकी शुरुआत सर्वप्रथम भारत में ही बतलाई जाती है। यद्यपि किसी भी परम्परा से जुड़ने का अर्थ उसका अनुसरण करना नहीं है बल्कि उसका वास्तविक अर्थ परम्परा की गतिशीलता और वर्तमान परिस्थितियों में उसकी सजीव प्रवाहमानता के मूल्यों की उस महत्ता में है, जो परम्पराओं की तारतम्यता के आकलन से व्यंजित होती है।

3.

देवनागरी लिपि में श, ष तथा स तीन वर्ण हैं, जिनका उच्चारण स्थान क्रमशः तालव्य, मूर्धन्य और दन्त्य निर्धारित है। इनके प्रयोग से हिन्दी में मानकीकरण की दृष्टि से तीन शब्द बनते हैं, जो इस प्रकार हैं--तालव्य 'श' से कोश, मूर्धन्य 'ष' से कोष तथा दन्त्य 'स' कोस और इन्हें इनकी इसी वर्तनी के साथ अर्थवान शब्द रूप में लिखा भी जाता रहा है। वैसे परम्परागत अर्थों के बाद वर्तमान में अब दन्त्य 'स' वाले कोस का अर्थ लगभग दो मील के बराबर का नाप से जुड़ा है, मूर्धन्य 'ष' वाले कोष का अर्थ खजाना के लिए व्यवहृत है, वहीं तालव्य 'श' वाले कोश से तात्पर्य है--ऐसे शब्दों का संग्रह जिसमें उनके संबंध में जानने योग्य सामग्री दी गई हो।

आगे सहूलियत के लिए यहाँ हमें 'कोश' शब्द के सापेक्ष अन्य भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों को भी देख लेना चाहिए। कोश के लिए सबसे प्राचीन नाम 'निघण्टु' है। कन्नड़, मलयालम और तेलुगु में अब भी कोश को निघण्टु की ही संज्ञा दी जाती है। मलयालम में अंग्रेजी के 'Lexicon' शब्द के लिए